INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

राष्ट्रीय स्वतत्रंता आन्दोलन में झारखण्ड के हजारीबाग में स्थानीय विद्रोह एवं स्वषासन

शैलेन्द्र कुमार दास
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
जगन्नाथ जैन महाविद्यालय,
झुमरी तिलैया, कोडरमा, झारखण्ड

सारांश :–
भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में कई ऐसे क्षेत्रीय आन्दोलन हुए जिसने स्वतंत्रता आन्दोलन को मजबूती प्रदान की। वर्तमान झारखण्ड का हजारीबाग जिला भी राष्ट्रीय आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। हजारीबाग क्षेत्र छोटानागपुर पठार का हिस्सा है जहाँ स्थानीय समुदायों के साथ–साथ आदिवासी समुदायों की प्रमुखता रही है। हालांकि ब्रिटिष शासन के आगमन के बाद हजारीबाग क्षेत्र 1920–47 ई0 के समय आन्दोलित हो उठा जिसका मुख्य कारण था ब्रिटिष शासन द्वारा पारंपरिक भूमि व्यवस्था का विखण्डन किया जाना, जमींदारी प्रथा को लाना, वन–कानूनों में हस्तक्षेप के साथ ही करो का बढ़ता बोझ आदि परिस्थितियों के फलस्वरूप हजारीबाग के स्थानीय समुदाय अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलित हो उठे। इस आन्दोलन में किसानों, आदिवासियों, महिलाओं और युवाओं की सक्रिय भागीदारी रही। राष्ट्रीय आन्दोलन का मूल रूप से आरंभ 1920 ई0 के असहयोग आन्दोलन से आरंभ हुआ था। इस आन्दोलन का मुख्य उद्धेष्य सरकारी संस्थानों का परित्याग करना था। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हजारीबाग के प्रमुख्य स्वतंत्रता सेनानी कृष्णबल्लभ सहाय, सीताराम अग्रवाल, बाबु रामनारायण सिंह, सरस्वती देवी बजरंग सहाय, बोंगा मांझी, सुखलाल सिंह एवं कई नेता सम्मिलित थे। इन नेताओं ने न केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लिया बल्कि समाज में प्रचलित कुरीतियों को भी दुर करने का प्रयास किया। इससे समाज में जागरूकता आई जिससे आन्दोलन को आगे बढ़ानें में सहायता मिली।

उद्देष्य :–
प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देष्य है :–

1. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के समय हजारीबाग क्षेत्र में स्वतंत्रता सेनानियों की भूमिकाओं का अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान स्थानीय स्वषासन के संदर्भ में अध्ययन करना।

शोध विधि :
प्रस्तुत शोध विवरणात्मक एवं विष्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया। इसके लिए द्वितीयक स्त्रोत का सहारा लिया गया है।

तथ्यों का विष्लेषण

संथाल हूल

(1855–56) के संथाल हूल की गूंज हजारीबाग क्षेत्र में बहुत तेज थी, जिसमें स्थानीय लोगों ने ब्रिटिष औपनिवेषिक शोषण के खिलाफ कड़ी टक्कर दी।

1857 का विद्रोह और विद्रोहियों का कब्जा :– 30 जुलाई 1857 ई0 में एक बजे दिन के समय 8वीं नेटिव इनफैन्ट्री सैनिक टुकड़ी ने हजारीबाग (सीतागढ़) में विद्रोह कर दिया था। वर्तमान में सीतागढ़ छावनी मे स्थित गौषाला है। इसी समय हजारीबाग सेन्ट्रल जेल के पास अवस्थित दफ्तर मे विद्रोह का सूचना चला गया जिससे विद्रोही उत्तेजित हो उठे जिससे जेल के अन्दर भी विद्रोही काफी उथल–पुथल करने लगे जिसे नियंत्रित करना अंग्रेजी सैनिकों को काफी समस्या का सामना करना पडा। विद्रोहियों ने जेल तोड़ दी और डिप्टी कमिष्वर को भागने पर विवष किया।

1920 ई0 का असहयोग आन्दोलन औपचारिक रूप से अगस्त 1920 ई0 में आरंभ किया गया था। ग्रामीण व वन क्षेत्र में रहने वाले लोगों ने आन्दोलन को तीव्रता के साथ बढ़ाया था। आदिवासियों ने अंग्रेजों द्वारा बनाए गए नियम को तोड़ने का प्रयास किया गया। 1920 ई0 के कॉग्रेस अधिवेषन में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए थे जिससे आन्दोलन के कार्यकारी स्वरूप तय किए गए। जो इस प्रकार के थे :–

1. अंग्रेजी सरकार से प्राप्त उपाधियों को वापस करना।
2. सरकारी पदों का परित्याग करना।
3. बच्चों को स्वदेषी स्कूलों में षिक्षा दिलवाना।
4. खादी उद्योग को बढावा देना।
5. वकील जो न्यायालय जाते हैं उनका परित्याग करना।

लगभग ग्रामीण क्षेत्रों में भी आन्दोलन का यह स्वरूप काफी चरम–सीमा तक पहुॅच गया था। असहयोग आन्दोलन गिरिडीह प्रान्त में विषाल रूप से धारण कर चुका था। आंदोलन को सफल बनाने के लिए बड़ी–बड़ी सभाओं का आयोजन ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों मे निरंतर किया जाता रहा। झगडों का निपटारा निजी स्तर पर पंचायत के द्वारा की जाती रही। 7 मार्च 1920 को राजेन्द्र प्रसाद ने कई महत्वपूर्ण जनसभाएं की और कहा कि ग्रामीणों क्षेत्रों में पंचायतों की गठन अतिआवष्यक है ताकि स्थानीय स्तर के लडाई झगडों का निपटारा आसानी से किया जा सके। इसके लिए हम अंग्रेजों पर निर्भर नहीं रहेंगे।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34)नमक कानून तोड़ने और ब्रिटिष शासन के विरूद्ध सत्याग्रह में यहाँ के स्थानीय विद्रोहियों की सक्रिय भागीदारीं देखने को मिली पुरूषों के साथ – साथ महिलाओं ने भी धरना प्रदर्षन और पिकेटिंग में भाग लिया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन का आरंभ गांधी जी ने किया था जिसका एक मात्र उद्देष्य अंग्रेजों के साम्राज्यवादी नीतियों का विरोध कर भारतीय जनता में आत्मविष्वास जगाना ताकि भारतीयों में देषभक्ति का जज्बा कायम हो। इसी समय हजारीबाग से सरला देवी, सरस्वती देवी, कृष्ण बल्लभ सरला बाबु रामनारायण सिंह, बजरंग सहाय एवं विवेकानन्द झा आदि क्रांतिकारी आन्दोलन के समर्थन में आगे आए और कार्यक्रम को बढ़ाया। सरस्वती देवी को जिला कॉग्रेस कमिटि का अध्यक्ष बनाया गया जिसके फलस्वरूप स्वाधीनता दिवस भी मनाया गया तथा राष्ट्रीय ध्वज भी फहराया। जिसमें 200 लोगों ने केषव हॉल के बाहर इस दिवस का स्वागत किया था। लोगों को जागरूक करने हेतु 9 मार्च 1930 को सरस्वती देवी ने हजारीबाग के पबरा के कई क्षेत्रों में जाकर जनसभाओं को संबोधित किया। स्वयं सेवकों ने भी आंदोलन को सफल बनाने के लिए घर जा जाकर सहभागिता में शामिल होते थे साथ ही प्रतीकात्मक नमक भी तैयार करते थे। साथ ही कुछ आदिवासी भी आन्दोलन को संचालित कर रहे थे। आन्दोलन के समय ही नमक सत्याग्रह के अलावा मदिरा एवं विदेषी वस्त्रों का बहिष्कार शामिल था। चौकीदारी टैक्स का भी विरोध इस दौरान किया गया था। अंग्रेजों द्वारा क्रिमनल लॉ अमेंडमेंट एक्ट की अधिसूचना जारी की गई जिससे स्थानीय लोगों की गिरफ्तारी की गई। इससे आंदोलन अधिक तीव्र हो गया। कुछ जमींदारों व उधोगपतियों ने आंदोलन को सफल बनाने के लिए कांग्रेस को अनुदान भी दिए।

1942 का भारत छोडो आंदोलन

1942 ई0 का भारत छोड़ो आन्दोलन हजारीबाग के लिए विषेष महत्व रखती है। उस समय हजारीबाग के केन्द्रीय कारा में रामवृक्ष बेनीपुरी, जयप्रकाष नारायण, कृष्णबल्लम सहाय, सीताराम अग्रवाल, मौजूद थे। इन्हें बाहर से खबर मिलती थी कि आन्दोलन चरम सीमा पर है। इसी समय रामनारायण बाबू को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया। इस दौरान हजारीबाग के कई स्थानीय क्रांतिकारी को जेल में डाल दिया गया। फिर भी यहॉ के नेतागन क्रांति की ज्वाला बुझने न ही दिया। गॉधी जी द्वारा दिए गए मंत्र ''करो या मरो'' का अनुसरण जयप्रकाष नारायण एवं उनके साथियों ने किया। जयप्रकाष नारायण एवं उनके पॉच साथियों ने हजारीबाग केन्द्रीय कारा की दीवार को दीपावली की रात में फांद कर अंग्रेजों की नींद उडा दी। तीन दिन जंगल में रहने के पश्चात वे नेपाल भागने में सफल रहें।

1 अगस्त 1942 को सरस्वती देवी ने नौजवानों की टोली लेकर देष की आजादी दिलाने के लिए निकल पड़ी जो उनकी साहस की परिचायक है। उन्होनें हिम्मत करके नौजवानों के साथ मिलकर हजारीबाग के कई क्षेत्रों में रोड़ेबाजी की तथा अंग्रेज विरोधी नारे लगाए हांलाकि 11 अगस्त की संध्या को गिरफ्तार करके उन्हें भागलपुर जेल भेज दिया गया। इसी समय कईक्षेत्रों में रेलवे स्टेषन तार डाकखाने को आग के हवाले कर दिया गया। प्रेस पर रोक लगा दिया गया। इस दौरान गांधी जी ने उपवास भी रखा था जिसे 2 मार्च 1943ई0 को हजारीबाग

में पुनः एक सभा का आयोजन किया गया। जिसके तहत लोगों से यह आग्रह किया गया कि देष की आजादी के लिए सभी मिलकर एकजुट हो जाएँ तभी देष आजाद हो पाएगा।

भारत छोडो आन्दोलन हजारीबाग जिले में 9 अगस्त 1942 ई0 को आरंभ किया गया था। इसी समय बाबु रामनारायण सिंह तथा सुखलाल सिंह की गिरफतारी की गई। 11 अगस्त 1942 ई0 को पटना सचिवालय में भी गिरफ्तारियाँ की गई थी। अंग्रेजी सरकार भारतीयों की एकजुटता देखकर हताहत हो गई थी। उसने अपने संघर्षो के माध्यम यह दिखा दिया कि किसी भी सुरत में अंग्रेजों को सफल नहीं होने देना है। 1942 ई0 के आन्दोलन को लेकर हजारीबाग काफी संवेदनषील हो गया था। यहाँ के शहरी ग्रामीण क्षेत्र के सभी युवा, महिला बुजुर्गो ने बढ़ चढकर आन्दोलन में हिस्सा लिया। इस आन्दोलन में जयप्रकाष नारायण, सीताराम अग्रवाल शीलग्राम सिंह, कृष्णवल्लभ सहाय, एक सरस्वती देवी ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया था।

हजारीबाग में राष्ट्रीय आन्दोलन के समय स्थानीय स्वषासन की अवधारणा :

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्धेष्य स्थानीय स्तर पर स्वषासन की स्थापना भी था। इसी का परिणाम था कि उत्तरी छोटानागपुर के हजारीबाग क्षेत्र भी इन विचारों से विषेष रूप से प्रभावषाली रहा। यहॉ के स्थानीय नेताओं किसानों आदिवासियों और सामान्य जनता ने न केवल ब्रिटिष शासन का विरोध किया बल्कि स्वषासन की अवधारणा को व्यवहार में लाने का प्रयास भी किया।

राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान हजारीबाग क्षेत्र में अंग्रेजी प्रषासन की नीतियों जैसे :– जबरन कर वसूली, चौकीदारी टैक्स, वन कानून तथा दमनकारी शोषणकारी शासन व्यवस्था आदि ने स्थानीय जनता में स्वषासन की मांग स्वाभाविक रूप से एवं से विकसित हुई। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान ग्राम या क्षेत्रीय स्तर पर जनता द्वारा स्वंय प्रषासन चलाने का प्रयास किया गया जिसमें प्रमुख रूप से ग्राम पंचायतों की स्थापना जनता द्वारा न्याय व्यवस्था , स्थानीय संसाधनों का प्रबंधन के साथ–साथ सामाजिक सुधार जैसे – पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह, षिक्षा–स्वच्छता व समानता पर जोर दिया गया। इससे न केवल जनता में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ बल्कि स्थानीय प्रषासन की समझ भी विकसित हुई।

राष्ट्र पिता महात्मा गॉधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन के नेतृत्व में विकेन्द्रीकरण को बढावा देने के लिए आर्थिक स्वावलंबन को महत्वपूर्ण कडी मानते थे जिसके कारण खादी और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया गया एवं विदेषी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। सबसे पहले असहयोग आन्दोलन के दौरान हजारीबाग के सीमावर्ती इलाकों में आन्दोलन के सफल बनाने के लिए कई बड़ी बडी सभाओं का आयोजन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निरंतर किया जाता था साथ ही लडाई – झगड़े का फैसला के निपटारा के लिए निजी स्तर पर पंचायतों की स्थापना की गई। 7 मार्च को राजेन्द्र प्रसाद ने कोयलबरी इलाकें में एक बडी जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि

हम किसी भी फैसलों के लिए अंग्रेजों पर निर्भर नहीं रहेंगे अतः पंचायत व्यवस्था ग्रामीण क्षेत्र के लिए अतिआवष्यक है। इस पंचायत व्यवस्था को बढावा देने के लिए तिलक स्वराज्य फण्ड की व्यवस्था की गई तथा सभी इलाकों में चरखा का वितरण किया गया जिससे स्थानीय लोगों का जुड़ाव बढ़ता गया और उनमें एकजुटता आई।

असहयोग आन्दोलन के पश्चात सविनय अवज्ञा का दौर आया। इस आन्दोलन के स्थानीय स्तर सफल बनाने हेतु स्थानीय जनता व नेताओं ने मिलकर काम किया। इस आन्दोलन में मुख्य रूप से सरला देवी, सरस्वती देवी, कृष्ण वल्लभ सहाय, बाबु रामनारायण सिंह, बजंरंग सहाय तथा विवेकानन्द झा की सराहनीय भूमिका रही थी। इन्होनें जिला कांग्रेस कमिटि के माध्यम से कार्यकर्ता सभा तथा पंचायत गठित करने के काम में लगे रहे। इसने स्थानीय शासन व्यवस्था को बढावा देने के लिए ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों के लिए प्राथमिक षिक्षा की व्यवस्था पर जोर दिया साथ ही ग्राम की साफ–सफाई , नषीले पदार्थ के दुष्प्रभाव की चर्चा पर विषेष बल दिया जिससे स्थानीय स्तर पर जनता में जागरूकता आई।

भारत छोडो आन्दोलन हजारीबाग जिले में 9 अगस्त 1942 ई को प्रभावी हो गया था। इस आन्दोलन में हजारीबाग के स्थानीय निवासियों, किसानों व ग्रामीण नेताओं ने पंचायत व प्रखण्ड स्तर पर ब्रिटिष हुकूमत को हिला दिया था। कटकमसांडी के पबरा गॉव आजादी के मतवालों के नाम से जाना गया जहॉ के 17 स्वतंत्रता सेनानियों ने मिलकर अंग्रेजी शासन के जड़ों को हिला दिया था। हजारीबाग के किसानों, छात्रों और आदिवासियों ने विभिन्न पंचायतों में आंदोलन को नई दिषा दी। आन्दोलन के दौरान समांतर सरकारों की स्थापना की गई थी हालांकि भारतीय कॉग्रेस कमिटि के माध्यम से स्वतंत्रता सेनानियों ने अंग्रेजों के विरूद्ध कड़ा संघर्ष किया जिसके परिणामस्वरूप पंचायती स्तर पर स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ–साथ स्थानीय कुरीतियों पर कडा प्रहार किया गया जिसके कारण एक विषाल जन समूह गिरिडीह , कोडरमा ,चतरा देवघर आदि क्षेत्रों में अंग्रेजों द्वारा स्थापित न्यायालय का सहारा नहीं लिया बल्कि स्थानीय स्वषासन लागू करते हुए अपने आपसी झगडों को निपटारा स्वयं किया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान पंचायत एक ऐसा माध्यम था जिसका सहारा लेकर, लोग अपनी झगड़ों का समाधान आसानी से कर लेते थे। इस प्रकार उन्होनें न्यायालय के बहिष्कार का मार्ग अपनाया। कई रचनात्मक कार्य को नई दिषा दी। साथ ही देष की आजादी का हिस्सा बनकर कांग्रेस में सम्मिलित होते चले गए। जिससे आजाद भारत का मार्ग प्रषस्त हुआ।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त वर्णित तथ्यों से स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्धेष्य स्थानीय स्तर पर स्वषासन की स्थापना भी था। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय यह विचार काफी प्रभावषाली रहा। यहॉ के स्थानीय नेताओं,

आदिवासियों, किसानों और जनता ने न केवल अंग्रेजों का विरोध किया बल्कि स्वषासन की अवधारणा को भी व्यवहार में लाने का भरसक प्रयास किया। यहॉ के लोगों ने यह सिद्ध किया कि स्वषासन केवल एक सिद्धांत नहीं बल्कि एक व्यवहारिक प्रक्रिया है जिसे जनता स्वयं लागू कर सकती है। इस प्रकार हजारीबाग में राष्ट्रीय स्वतत्रंता आन्दोलन एवं स्थानीय स्वषासन का अनुभव भारतीय पंचायती राज व्यवस्था व लोकतांत्रिक प्रणाली के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

संदर्भ :–

1. दत्ता के0के0 ''बिहार में स्वातंत्रय आन्दोलन का इतिहास'' भाग 2 बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
2. घोष पापिया '' बिहार में सविनय अवज्ञ आन्दोलन'' मानक पब्लिकेषन , दिल्ली 2011
3. कुमारी सुषमा '' भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में बिहारी महिलाएॅ'' (2020) जानकी प्रकाषन
4. पॉलिटिकल स्पेषल फाइल नं0 151, बिहार स्टेअस अभिलेखागार, पटना।
5. देषपाण्डे निर्मला '' विनोबा'' (1995) नेषनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली।

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM